Volume-10, No. 2 Aug.-2023, pp. Hin.11-13

पर्यावरणीय असन्तुलन

डॉ0 अजीत सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राज0स्ना0महा0 कोटद्वार (उत्तराखण्ड) भारत।

पर्यावरण का एक सामान्य सा अर्थ यह है कि जो हमारे आसपास के पांच तत्व जैसे– जल, वायु, भूमि, जीव–जन्तु और वनस्पति है वो हमारे जीवन को दिन–प्रतिदिन प्रभावित करते हैं। जैसा कि डोगलस और हॉलैण्ड ने भी बताया है कि ''पर्यावरण का तात्पर्य इन सभी वाह्य शक्तियों, प्रभावों और आवश्यकताओं से है जो जीवित प्राणियों के जीवन, स्वभाव, व्यवहार और विकास एवं परिपक्वता को प्रभावित करता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि पर्यावरण और मानव का सम्बन्ध गहरा है और पर्यावरण पर ही मानव का सम्पूर्ण विकास निर्भर करता है।

मुख्य शब्द– पर्यावरणीय असन्तुलन के कारण, पर्यावरण सन्तुलन के उपाय

प्राचीन काल से पर्यावरण निर्मल, स्वच्छ एवं स्वस्थ था, लेकिन जैसे–जैसे मनुष्य की संख्या वृद्धि होती गई और उसका दिमाग, बुद्धि और तकनीकि सोच विकसित हो गया, वैसे–वैसे मनुष्य पर्यावरण संसाधनों पर बिना सोचे हस्तक्षेप करने से पर्यावरण असन्तुलित होता गया। हमें मालूम है कि मानव जीवन का लगातार विकास एक अच्छे और संतुलित पर्यावरण का ही परिणाम है। लेकिन व्यक्ति ने इस जीवन देने वाले पर्यावरण को अपने ही हाथों से अप्राकृतिक गतिविधियों के कारण असंतुलित कर रखा है।

पर्यावरणीय व्हास और पर्यावरणीय असंतुलन का प्रश्न आज मानवता के सामने एक विकराल समस्या के रूप में उठ खड़ा हुआ है। स्थिति यह है कि जिन्दा रहने के लिए साफ हवा, स्वच्छ वातावरण, नीले आकाश की शांति, रिमझिम वर्षा आदि बातें किस्से कहानियां बनती जा रही हैं। वाहनों और कारखानों से होने वाले कार्बन उत्सर्जन ने नीले आकाश को लील लिया है। वायु प्रदूषण के कारण नगरों और महानगरों की सांसे जहरीली हो गयी हैं। व्यक्ति की हर सांस में घुलता जहर न केवल जीवन की सांसों को समेट रहा है, बल्कि उसकी अनुवांशिकी को भी दुष्प्रभावित करने लगा है। बढ़ते औद्योगिक विकास, बढ़ता नगरीकरण और तेजगति से बढ़ रही जनसंख्या के कारण वृक्षों और जंगलों की कटाई बड़ी तीव्र गति से हुई है। वनों को काटकर जहां आबादी बसाई जा रही है, वहीं दूसरी तरफ अधिक संख्या में उद्योगों की स्थापना, सड़कों का निर्माण व चौड़ीकरण, रेल लाइनों का विस्तार, हवाई पट्टियों का निर्माण, नवीन भवनों, स्वास्थ्य केन्द्रों का निर्माण आदि जारी है। हमारे ऐसे कार्यों से वनों का क्षेत्रफल घटा है तो पेड़ पौधों की संख्या भी घटी है जिसका हमारे जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। सदियों से चला आ रहा प्रकृति और मनुष्य के बीच का अनोखा तथा गहरा सम्बन्ध अब समाप्त होता नजर आ रहा है जो मनुष्य जीवन के लिए खतरे का संकेत है। अतएव शांत और सुरम्य जीवन के लिए सुरक्षित पर्यावरणीय समय की मांग बन गई है।

यही नहीं नगरीकरण की बेलगाम प्रक्रिया ने इन शहरों को ही जहरीला नहीं किया, वरन् शहरों के गन्दे पानी से बनने वाले जहरीली हवा, हमारी जीवन दायिनी नदियों और भूमिगत जल को भी बुरी तरह दूषित कर रहे हैं। बची–खुची कसर खेतों में प्रयोग होने वाले रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों ने पूरी कर दी है। स्थिति यह है कि अधिक मुनाफा कमाने के चक्कर में हमारी धरती की उर्वरा शक्ति विलुप्त होने की ओर अग्रसर है। नतीजतन हमारे खाद्य पदार्थ, अनाज, सब्जियां, फल, दूध आदि सभी कुछ जहरीला और प्रदूषित

हो चुका है। देश की कोई ऐसी नदी नहीं बची है जिसका पानी सीधे बिना फिल्टर किये पीने लायक बचा हो। इन सब प्रदूषित वातावरण का प्रभाव व्यक्ति की प्रकृति पर भी पड़ रहा है। बहुधा शांति, दया, प्रेम, करूणा और सहिष्णुता की जगह मानव स्वभाव में चिड़चिड़ापन, असहिणुता, क्रूरता, उत्तेजना और उग्रता आ गयी है। इंसान मानव की जगह दानव बनने की प्रक्रिया में चला गया है। रोड–रेज, छोटी–छोटी बातों पर लड़ाई–झगड़ा, लूटपाट, कत्ल, हिंसा, बलात्कार आदि इसी का परिणाम है।

प्रदूषण केवल वायु तक सीमित नहीं है, बल्कि वायु मण्डल में हवाओं के द्वारा कार्बन मोनोआक्साइड, सल्फयूरिक एसिड, क्रोमियम, कोबाल्ट के पार्टिकल मीलों दूर उन हिमालयी जंगलों और ग्लेशियरों को निशाना बना रहे हैं। जिसका इस कार्बन उत्सर्जन से कोई सम्बन्ध नहीं है। स्थिति यह है कि इन कार्बन पार्टिकलों के मानसूनी हवाओं के साथ हिमालयी पहाड़ियों से टकराने से वहां न केवल तेजाबी बारिश बढ़ गयी है, बल्कि हिमालय के वनों और ग्लेशियों को भी भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। 2013 में हुई केदारनाथ की घटना, किसी से छुपी नहीं है, जिसमें लगभग दस हजार लोग कुछ ही सैकण्डों में काल के मुंह में समा गये थे। हिमालय में पिछले कुछ समय से हर साल बढ़ती बादल फटने की घटनाओं एवं तेजाबी वर्षा का मुख्य कारण केवल और केवल वायु प्रदूषण है। इस प्रकार वर्तमान वायु प्रदूषण ने गंगा और यमुना जैसी जीवनदायिनी नदियों के श्रोतों को दूषित कर दिया है।

ऐसा ही नहीं है कि यह प्रदूषण केवल जल, वायु, पृथ्वी और आकाश में व्याप्त हो बल्कि ध्वनि प्रदूषण ने भी शांति का हरण किया है। विभिन्न कारखानों और मोटर वाहनों की आवाज, वायुयान और सैन्य अभ्यासों के शोर ध्वनि विस्तारण यंत्रों का प्रयोग आदि ऐसी बातें है जिनसे ध्वनि प्रदूषण 80 डेसीबल की मानव श्रवण क्षमता को पार करता जा रहा है। इससे भी मानव मस्तिष्क और अनुवांशिकी पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।

दूसरी तरफ प्रकाश प्रदूषण भी एक बड़ी समस्या का रूप धारण करता जा रहा है। शहरों के विस्तारीकरण और स्ट्रीट लाइटों ने वहां के पेड़–पौधों और पशु–पक्षियों के जीवन को बर्बाद करके रख दिया है। इन पेड़ पौधों और पशु पक्षियों की अनुवांशिकी में विकृता आ गयी है। प्रकाश प्रदूषण सबसे खतरनाक प्रदूषण है। रात्रि को प्रकाश का प्रयोग प्रकृति के मूल नियमों के विपरीत है।

प्रदूषण की विभिषिका को ही वर्तमान में जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण माना जा रहा है। विश्वयुद्ध के भय से तो मानवता के संहार को रोका जा सकता है, लेकिन विकास की दौड़ में सरकारी और गैर सरकारी कार्यों से जो पर्यावरण ह्रास हो रहा है उसका शिकार हर साल उतने ही लोग हो रहे हैं जितना कि पांच साल के विश्वयुद्ध में हुए थे।

वर्तमान की दशा

वनों–पेड़ पौधों से पर्यावरण है और मनुष्य जीवन का निर्माण स्वच्छ एवं सुन्दर पर्यावरण की देन है, परन्तु मानव पेड़–पौधों का कारक पालक न होकर पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाला विध्वंसक बन गया है, आज के समय में मानव की अपनी व्यक्तिगत सोच ने अपने भौतिक सुख को प्राप्त करने के लिए वनों और प्रकृति से छेड़छाड़ कर अपने को संवारने में लगा है, उससे ज्ञात होता है कि केवल पेड़ पौधों, जंगलों का ही नहीं, बल्कि अन्य प्राकृतिक सम्पदाओं का भी बहुत बड़े स्तर पर विदोहन हो रहा है। जिससे हमारा अस्तित्व पूर्ण खतरे में हो गया है। मनुष्य शिकारी युग से आधुनिक प्रौद्योगिकी युग तक अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए वन सम्पदा, पर्यावरण और वातावरण को लगातार प्रदूषित एवं नष्ट ही किया है।

आंकड़े इस तथ्य का प्रमाण हैं कि देश को आजाद होने के समय लगभग 40 प्रतिशत भू–भाग पर वन थे लेकिन देश को स्वतंत्रता होने के पश्चात् इसकी स्थिति में लगातार गिरावट आती गयी और यह घटकर लगभग 18 प्रतिशत यानि आधे से कम हो गया है। सन् 1989 से 2003 की अवधि में जंगलों का क्षेत्रफल लगभग 20 प्रतिशत था जो अब घटकर लगभग 18 प्रतिशत से भी कम रह गया है।

समस्या

जंगलों की लगातार और बडे स्तर पर कटाई के कारण पर्यावरण को वृहद नुकसान पहुंचा है। इससे मानव के समक्ष काफी समस्याओं का उदय भी हुआ है। भू–क्षरण, मौसम चक्र में अनिश्चितता, विश्व स्तर पर जलवायु परिवर्तन,

अनियमित मानसून, वन सम्पदा या वनस्पतियों और जंगली जानवर, जीव जन्तुओं का लुप्त होना, पृथ्वी के तापमान में निरन्तर बढ़ोत्तरी, प्राकृतिक आपदाओं जैसे– भूकम्प, बाढ़, आंधी, तूफान, समुद्री चक्रवात आदि–आदि समस्याओं ने मानवीय जीवन को कठिन बनाया है और इसे विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है।

पर्यावरणीय असन्तुलन के कारण

विश्व स्तर पर जलवायु और पर्यावरण ह्रास पर चिन्तन की आवश्यकता है। जनसंख्या से वन और पर्यावरण का निरंतर ह्रास होता जा रहा है। पर्यावरण असन्तुलन के दो कारण हैं। (1) बढ़ती जनसंख्या और (2) बढ़ती मानवीय आवश्यकताऐं तथा उपभोगतावृति इन दोनों का असर प्राकृतिक संसाधनों पर पड़ता है और उनकी वहनीय क्षमता लगातार कम होती जा रही है। पेड़ों के कटने, भूमि के खनन, जल के दुरूपयोग और वायुमण्डल के प्रदूषण के पर्यावरण को गंभीर खतरा पैदा किया है। इससे प्राकृतिक आपदाएं भी बढ़ी है। दुनिया भर में पर्यावरण से सम्बन्धित चेतना तो बढ़ रही है परन्तु धरातल पर उसकी वास्तविकता दिखाई नहीं पड़ रही है। इसके नाम पर केवल लीपापोती हो रही है।

पर्यावरण सन्तुलन के उपाय

पर्यावरण सन्तुलन का एक मात्र उपाय पौधारोपण व उसकी सुरक्षा व संरक्षण है। पेड़ पौधों की कटाई से जहां वृहद पैमाने पर क्षरण हो रहा है, वहीं प्राकृतिक प्रकोपों का भी लोगों को कोपभोजन होना पड़ रहा है। पौधों से ही वनस्पति जगत में संतुलन बनाया जा सकता है। हमारी आवश्यकता असीमित है तथा प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं। प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग इसे धारणीय बनाने के लिए आवश्यक है। इसलिए संसाधनों का संरक्षण जरूरी है। पर्यावरण के संरक्षण का अर्थ है संसाधनों का इस तरह से उपयोग किया जाये कि वर्तमान पीढ़ी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति आने वाली पीढ़ी की आवश्यकताओं से बगैर समझौता किये कर सके।

उपसंहार

मनुष्य के क्रियाकलापों के कारण पर्यावरण में तेजी से बदलाव आ रहा है, इस बदलाव के अनेक रूप हैं। जैसे ओजोन क्षरण वनों की कटाई, अम्लीय वर्षा, वायुमण्डल में ग्रीन हाउस गैसों की अधिकता, वायुमण्डलीय तापमान में वृद्धि, घटते प्राकृति संसाधनों की समस्या से निपटने के लिए समाज के सभी स्तर पर पर्यावरण से सम्बन्धित जागरूकता अनिवार्य है। वैज्ञानिकों, राजनीतिज्ञों, नियोजनों तथा समस्त समाज के लोगों को सामूहिक रूप से पर्यावरण की स्थिति सुधारने के लिए काम करना होगा। जिसके लिए संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कुछ उपाय जैसे जनसंख्या नियंत्रण, विकसित देशों में नियन्त्रित उपभोक्तावाद, ग्रीन हाउस गैसों को कम करना, पर्यावरण की शिक्षा लागू करना, व्यापक शिक्षा तथा पर्यावरणीय जागरूकता के कार्यक्रमों पर निवेश करना, पर्यावरण अनुसंधान के लिए अतिरिक्त फंड की आवश्यकता, पर्यावरण संरक्षण में मीडिया की भूमिका इत्यादि।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. किग्सटन, लिंडसे (2013), ''एन इवेलवेशन ऑफ इन्वायरमेण्टल ऐजुकेशन प्रोग्राम्स ऑन पीम्बा आइसलैंड ''आई0एस0पी0 1523
2. अग्रवाल, के. सी. (1978) ''एनवायर्नमेंटल बायोलोजी'' बिकानेर (भारत) एग्रो बॉटनिकल पब्लिकेशन, पृष्ठ 439
3. भार्गव, महेश (1992–93), "अनुसंधान मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन", नवम् संस्करण, हर प्रसाद भार्गव, शैक्षिक प्रकाशक, कचहरी घाट, आगरा–282004
4. चन्द्र, एस. (1992) पर्यावरण, प्रदूषण एवं मानव स्वास्थय आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली पृष्ठ 134.
5. दुबे.ए., के. (1999) ''पर्यावरण विधियाँ'' सैन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
6. दुबे, आर. (2004) ''पर्यावरण शिक्षा, सैन्ट्रल ला पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
7. गोयल, एम.के. (2003) ''पर्यावरण शिक्षा'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा पृष्ठ 466.
8. गुप्ता, आर.डी. एवं सिंह के. वी. (2004) ''पर्यावरण अध्ययन'' आर.लाल बुक डिपो, मेरठ पृष्ठ 346
9. गुर्जर, आर. एवं जाट, वी.सी. (2003) ''संसाधन एवं पर्यावरण'' पंचशील प्रकाशन जयपुर।
10. रघुवंशी, ए. तथा रघुवंशी, एच. एल. (1995) पर्यावरण तथा प्रदूषण : मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।